DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

IMPRINT

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

DITF BULLETIN

वर्ष-3 | अंक-26 | फरवरी-2023

kaleidoscope of thoughts and VISION

EMPOWERING *ideas*

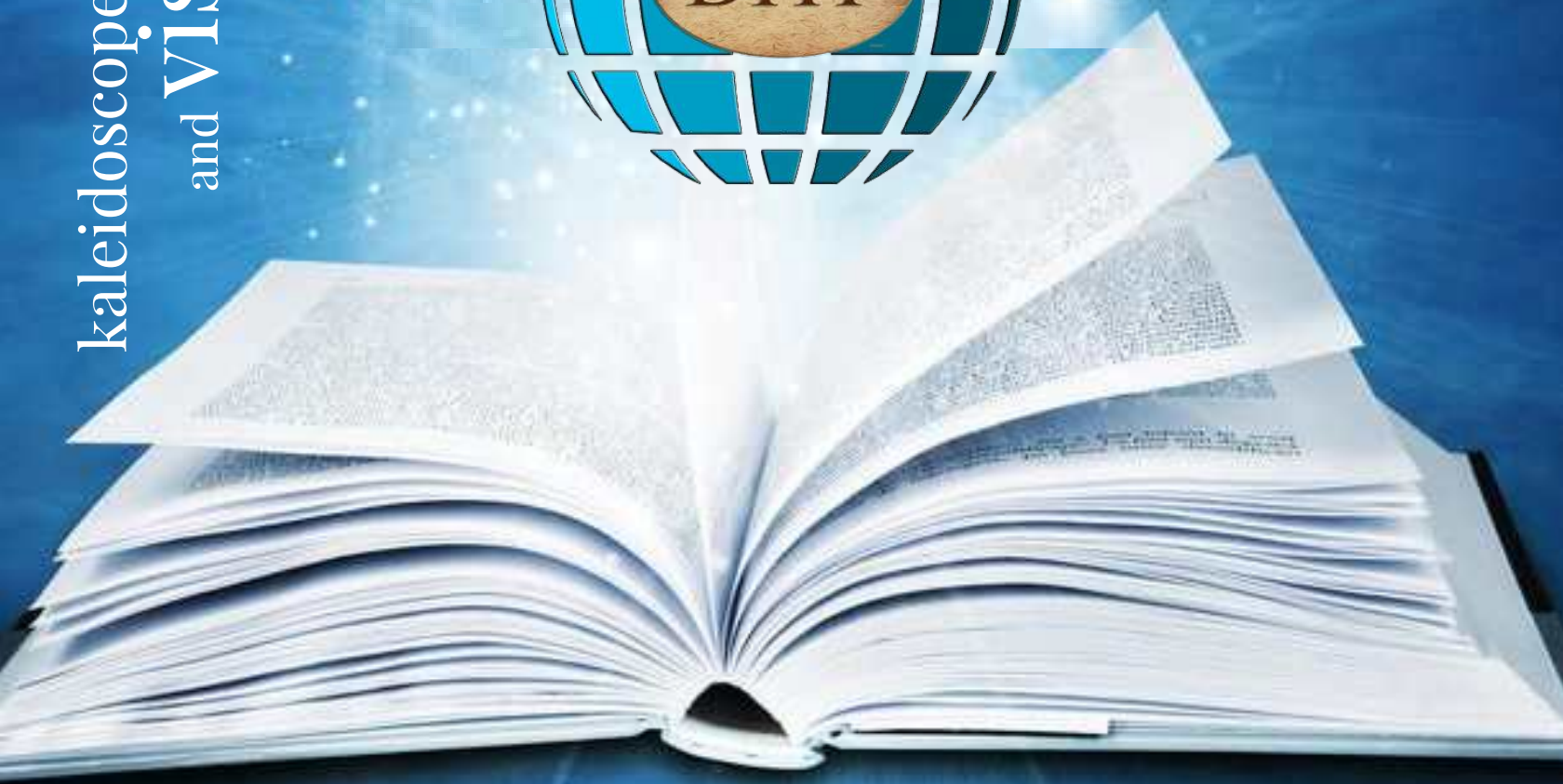

Amalgamation of Learning

FEBRUARY EDITION

संपादक

डॉ. तरूणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट

देवेश दाधीच

प्रकाशक

शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

सम्पादकीय आलेख

भागीदारी

डॉ.तरूणा दाधीच
मुख्य संपादक

'भागीदारी'शब्द अपने आप में अत्यंत अर्थदायक शब्द है । कोई भी कार्य बिना भागीदारी से संभव होना थोड़ा जटिल-सा हो जाता है, परंतु जिम्मेदार और कर्मठ लोगों के साथ हो जाने से कार्य व्यवस्थित और सुनियोजित संपन्न होता है । ऐसा ही एक अति विशिष्ट कार्य संपन्न हुआ डीआईटीएफ और दाधीच समाज चित्तौड़गढ़ द्वारा दिनांक 7 व 8 जरवरी, 2023 को महर्षि दधीचि कथा का आयोजन । कथा श्रवण का आनंद लेने न केवल चित्तौड़गढ़ वरन् आसपास के कई स्थानों से माताओं - बहनों और पुरुष वर्ग ने पधार कर कथा श्रवण किया। आप सभी की भागीदारी ने कथा आयोजन को सफल बनाया। कथा महोत्सव के दूसरे दिन एक अविस्मरणीय क्षण था , जब डीआईटीएफ द्वारा बनाई गई शॉर्ट फिल्म को रिलीज किया गया। जिसमें डीआईटीएफ के फाउंडर प्रेसिडेंट देवेश जी अपने परिवार के साथ उपस्थित थे। एक साथ कई परिजनों ने इस फिल्म को देखा। डीआईटीएफ के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया । डीआईटीएफ ने अपनी सेवाएं जारी रखते हुए चित्तौड़गढ़ चैप्टर के अध्यक्ष यशवंत जी के सहयोग से चित्तौड़गढ़ जिले के सेमालिया और बोरदा के राजकीय विद्यालयों में ऊनी वस्त्र भेंट किए गए। सुश्री नंदिनी त्रिपाठी द्वारा चलाए जा रहे वृद्धश्रम,चित्तौड़गढ़ में भी ऊनी वस्त्र व कंबलें भेंट की गई। इसी के साथ भीलवाड़ा की सुदामा सेवा समिति में भी ऊनी वस्त्र व कंबल भेंट की गई । यही नहीं डीआईटीएफ अब समाज के नन्हें वैज्ञानिकों की तलाश में है, उनके लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसक निर्णायक स्वयं डीआरडीओ में कार्यरत सुश्री अर्चना व्यास है। आप भी अपने परिजनों, अपने परिवार में से यदि कोई नन्हा मुन्ना वैज्ञानिक है तो उन्हें इसे हेतु प्रेरित करें ।

शुभम् भवतु।

संपादक की कलम से.....

दाधीच इन्टरनेशनल ट्रेड फाउण्डेशन एवं
दाधीच समाज चित्तौड़गढ़ द्वारा आयोजित

प्रिय परिजन,आगामी तीन अंकों हेतु डीआईटीएफ बुलेटिन यात्रा-वृतांत आरंभ करने जा रहा है, यदि आपकी यात्रा के कुछ सुनहरे पल,यादें या कोई अविस्मरणीय घटना है तो हमें प्रेषित करें।

"जय महर्षि दधीचि"

"जय दधिमती माता"

अतिथि आलेख

॥नूतन वर्षाभिनन्दन॥

"आशासे यत नववर्षं भवतु मंगलकरम् अद्यतकरश्च । जीवनस्य सकलकामनासिध्दिरस्तु॥

नववर्ष हम सभी के जीवन में एक नई उम्मीद, नई आस उत्पन्न करता हैं। अतः आशा हैं कि यह नववर्ष भी आप सभी के जीवन में नूतनता लेकर आया होगा। साथ ही बसन्त पंचमी का पर्व भी हमारे जीवन में बसन्त की तरह ही नवीन रंग बिखेर रहे होंगे यही आशा हैं। यह उत्सव, त्यौहार, पर्व ही हमारी संस्कृति की भी पहचान हैं। संस्कृति व परम्पराओं से ही हमारी पहचान हैं और हमारे संस्कार भी इन्हीं से संस्कारित होते हैं। यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात हैं कि इन परम्पराओं, संस्कारों, पर्वों, उत्सवों को प्रत्येक स्तर पर जीवन्त बनाए रखने का कार्य कर रहा हं। हमारा अपना मंच DI TF हमें व हमारे समाज की प्रत्येक पीढ़ी को एक उच्च कोटि का मंच प्रदान करता हैं अपनी प्रतिभाओं को सामने लाने के लिए।

DITF के माध्यम से ही आज हम सभी देश-विदेश में बैठे उन सभी व्यक्तित्व को जान पाये हैं जो अपने-अपने क्षैत्र में अग्रणी कार्य कर रहे हैं। विशेष अवसरों पर DI TF हमें ऐसे व्यक्तित्व से रूबरू करवाता हैं जो देश-विदेश में हम दधीचि वंशजों का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐसे व्यक्तियों से मिलकर हमारी आने वाली पीढ़ी भी नए कार्य करने को प्रोत्साहित हो रही हैं। यह हमें उद्योग लेखन कार्य, मनोरंजन, संस्थाओं, शिक्षा जगत व अन्य कार्य क्षत्रों आदि से परिचित करवाता हैं एवं नए क्षेत्रों की जानकारी प्रदान करने में आने वाली युवा पीढ़ी का सहयोग करता हैं। साथ ही समाज के दूरीयों पर बैठे परिवारों को मिलाने का भी यह एक मंच हैं। हाल ही हमने देखा भी हैं कि यह योग्य व्यक्तियों को मिलवाकर नवीन योग्य जोड़ियों को बनाने में भी सहयोग कर रहा हैं। निश्चित ही यह एक नई पहल हैं जो DI TF के माध्यम से हमें मिली हैं। यह हर क्षेत्र में कार्य करके हम ऊर्जावान बनाने का एक निरन्तर प्रयास हैं। उदाहरण के रूप में- हाल ही में हमनें देखा हैं कि DITF के चित्तौड़गढ़ चेप्टर के रूप में DITF व टीम के द्वारा महर्षि दधीचि भगवान की कथा का भव्य आयोजन चित्तौड़गढ़ शहर में करवाया गया जो पूर्णतः शुभ व सफल आयोजन रहा। इस कथा के माध्यम से नगरवासियों व आस-पास के क्षेत्रों से पधारे हुए अधिथियों को हमारे वंश की महानता के बारे में सत्य का अहसास हुआ व हमारे बच्चों व युवा पीढ़ी को भी महर्षि दधीचि के त्याग, बलिदान व महानता का ज्ञान हो पाया। जिसकी भी-भूरी प्रशंसा की गई। निश्चय ही यह युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का एक माध्यम सिध्द हुआ हैं। यह कथा नैमिषारण्य के पं. कृष्णगोपाल शर्मा जी के मुखारविंद से कही गई। इस भव्य कथा में प्रथम बार महर्षि दधीचि भगवान पर बनाई गई फिल्म का प्रोमो भी लाईव प्रदर्शित किया गया जिसे देखकर सभी समाजजन गद्गद् हो उठे व फिल्म की अन्यन्त प्रशंसा की गई।

सत्य ही हैं DITF एक ऐसी पहल हैं, एक ऐसा मंच हैं जो प्रतिभाओं को सामने लाकर, नवीन युवापीढ़ी को प्रत्येक क्षेत्र में सम्बल प्रदान करने का कार्य कर रहा हैं।

इस हेतु हम DI TF के संस्थापक श्री देवेश जी दाधीच व इस महान फिल्म की निर्देशक श्रीमति शोभा जी दाधीच व टीम को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहते हैं कि आपके द्वारा यह मंच व इ समंच पर इस प्रकार की फिल्म का प्रोमों रिलिज करवाने का कार्य कर आपने नवीन पीढ़ी को सत्य का साक्षात्कार करवाया हैं।

DITF के द्वारा जो बुलेटीन्स निकाले जा रहे हैं यह भी निश्चित ही नवीन व सुन्दर पहल की गई हैं। बुलेटिन्स के माध्यम से हम चिकित्सा, आयुर्वेद, साहित्य, उद्योग, पर्व, त्यौहार, नवी लेखन, मौलिक रचना क्षेत्र, नवीन सोच, प्राचीन परम्पराओं, आध्यात्मिकता का बोध, विभिन्न क्षेत्रों के विज्ञापना आदि से परिचित हो पाते हैं व हमारी पीढ़ी इन नवीन क्षेत्रों के बारे में जानकर प्रोत्साहित होकर कार्य करने के लिए तैयार हो रही हैं।

मैं इस पत्रिका की संपादक महोदया डॉ. तरुणा जी दाधीच फाउण्डर प्रेसिडेन्ट श्री देवेश जी दाधीच व प्रकाशक श्रीमति शोभा जी दाधीच का आभार व धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। कि अप सभी ने मिलकर हमारी पीढ़ी को नवीन दिशा दी हैं। DITF परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

जिन्होंने हम सभी को नववर्ष में व इस बसन्त पंचमी पर्व पर नवीन व सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत किया हैं व नई सोच प्रदान कर सभी के जीवन में नया बसन्त लाने का प्रयास किया हैं। इन नवीन रंगों व आनन्द के क्षणों के लिए आभार।

"सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु। सर्वः कामनावाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

"अवतु प्रीणातु च त्वां भक्तवत्सलः ईश्वरः। नववर्षशुशाकाङ्क्षाः।।

"वसन्तोत्सवस्यनैकाः शुभकामनाः।।

डॉ. प्रतिभा तिवारी

प्राचाय बी. एड. कॉलेज, पी. एच. डी. इन एज्युकेशन

टोपल एम. ए., एम.एड., बी. एड. जिला अध्यक्ष

- अखिल भारतीय साहित्य परिषद्,

चित्तौड़गढ़ जिलाध्यक्ष- समता साहित्य अकादमी, चित्तौड़गढ़

अपने इतिहास और अपने वंश पर गर्व करेंचित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक शहर में शोभा दाधीच द्वारा निर्मित और अब जल्द ही भारत के अन्य शहरों में दिखाई जाने वाली हमारी फिल्म महादानी दधीचि के विश्व प्रीमियर की सफल स्क्रीनिंग के बाद जल्द ही हमारे यूट्यूब चैनल के सब्सक्राइबर्स के लिए उपलब्ध होगी। https://www.youtube.com/channel/UC0jQv0M5G1BB4Vb43aP6-Jg

Dadheech International Trade Foundation

Learning science outside of books is fun, and science projects give this opportunity. Let's enjoy science on its very day, science day, **28th Feb 2023**.DITF in order to foster and encourage interest in science and technology among our children invites children

*Students upto **12th standard to particiate** in this event. Choose any science stream and present your project by sending us a video of the same.*

Provided below is a guide to prepare your project

1. *Introduce yourself and the basic principle of the science you are going present.*
2. *Throw some light on your experimental set up.*
3. *Conclude your project with the analytical findings and it's usefulness.*
4. *The time duration of the video should not be more than 4 minutes.*

Prize amount will be equally divided in case of joint winners Submit your entry by filling the Google form and attach your video in it.

1st Prize Cash
Rs 5000/-

2nd Prize Cash
Rs 3000/-

3rd Prize Cash
Rs 1000/-

Last date to submit your form is 24th February 5pm.

Our judge

Ms Archana Vyas
A Scientist In DRDO

She did M Tech (IIT Delhi) in 2003. Experience of 19 years in R&D and Project Management.

Her decision will be final.

CA Devesh Dadheech, Founder President DITF

www.ditfindia.org ditfindia@gmail.com

Dadheech International Trade Foundation

Notes on AYURVEDA Part 7

Doshas and their Sub-Doshas or Subtypes of Doshas

- By Vinod Haritwal

Vata Dosha

Vata is a force conceptually made up of the elements Aakasha (space, void) and Vayu (air, motion). The proportions of Akasha and Vayu determine how active Vata is. The quantum of Akasha affects the ability of the Motion to gain momentum. Of the universal qualities, Vata dosha has a predominance of Rajas.

Vata dosha, is responsible for origin and destruction. In brief, it initiates the spark or movement for creation and also sets in the parameters for destruction. Hence it is understood as the prime force present or dominant at the birth and death of any entity. It is responsible to carry the energy source viz. Kapha to Pitta for transformation and then transport the converted energy to different locations. To understand Vata dosha from a human perspective we need to understand its functions. Vata is responsible for the senses, intellect, digestion, excretion and touch. It provides individuals with sensory observations, which lead to enthusiasm, reasoning, and creativity. It also supplies the brain with intellectual capacity for memory and wisdom. In the digestive process, vata is part of the final stages, and thus helps in elimination of food from the body. Lastly, tactile sensation is supplied by vata as it is partly composed of air.

On a deep scan of these functions we can comprehend that Vata dosha is associated with movement or motion of any kind, whether it can be perceived visually, as in the case of a locomotion or other actions, or comprehended mentally as in case of the flow of impulses, thoughts, energy, etc.

Vata dosha has its prime seat of location in a human body in:

Large and small intestines,

Ears and the Sense organ of touch [skin].

However, Pakvashaya, which can be correlated to the major part of the large intestine, is considered as the prime seat of action.

The pathology of Vata dosha can be studied through its increase or decrease in the body. Since Vata dosha is responsible for transportation and motion, its increase logically can result in the uncontrolled increase of these functions, which may lead to early burn outs, exhaustion of resources and friction. The stability of the body would be disturbed with arrhythmic movements whether it be heart beats, speech or movement of joints.

Increase of Vat dosha leads to:

Emaciation

Dark skin tone

Desire for hot things
Tremors
Flatulence
Constipation
Loss of strength
Insomnia
Malfunction of the sense organs
Hallucinations.
Decrease of Vata dosha would have an opposite effect. The movements would be highly reduced. Transportation of materials and evacuation of wastes would be slowed down,
leading to a build up of toxins. The decrease of Vat dosha leads to:
Loss of speech,
Loss of motor functions
Delirium
Symptoms similar to increase of Kapha dosha
Vata Subtypes

Vata dosha carries out its various functions through its five forms or subtypes. They are:

Prana (प्राण)
Udana (उदान)
Samana (समान)
Vyana (व्यान)
Apana (अपान)

These are the Sanskrit names of the five types of Vata. There are no equivalent terms in English. They are also called "Vayus" which also means winds. They show the different kinds
of movement of the life-force.

All five Vayus are more complex than their simple physical presentation. Besides their sites and actions in the physical body, they also have their actions on the subtler aspects of our being as the senses, breath, emotions, thought and consciousness. Each has its activity on the skin as well (which relates to the senses and breath). Keeping all five Vayus in balance and in proper functioning on all the levels of our being is the key to real health .

Let us take a brief look at each of the Vayus:

Prana

Prana (pra-ana) means the forward or "primary air" or nervous force. The prefix "pra" means forward, towards or prior, and relates to absorption. Prana Vayu is located in the Brain, Nose and Throat. Prana vayu functions in the head, neck and chest region, and the direction of its action is from the atmosphere to the inside of the body. It carries out the functions of the sensory organs in the head and acts as a receptor of all external stimuli. In the same way, it allows us to take in feelings and knowledge. Pervading the head and centred in the brain, Prana moves downward to the chest and throat. It governs inhalation, taking in food and water, as well as sneezing, spitting and belching. It governs the intake of impressions through the five senses of touch, smell, sound, taste and vision, interpreting these impressions and coordinating reactions to them, mental activities and grasping of knowledge. Prana vayu also keeps the consciousness intact.
On an inner level, it governs the mind, heart

and consciousness and gives them energy, coordination and adaptability. It is our portion of the cosmic life energy and directs all the other Vatas in the body. It determines our inspiration or positive spirit in life and connects us with our inner Self or pure consciousness. (The term "Prana" is also used in a broader sense to indicate Vata in general, as all Vatas derive from it). It affords us receptivity to external sources of nourishment. These depend upon the opening of our mouths and senses, and the opening of the mind behind them. Prana gives us receptivity towards internal forms of nourishment, like our inner connection to the cosmic life-force. When Prana is sufficient, no disease can affect us. All diseases involve some impairment of Prana and can be treated with methods like Pranayama, breathing exercises, or aroma therapy,
which help balance it.

Udana

Udana (ud-ana) means the "upward moving air" or nervous force. The prefix "ud" means upwards. Udan Vayu is located in Chest and throat, Nose and Umbilical region. Udan vayu acts in the opposite direction of Prana vayu. It acts in an upward and outward direction. It governs exhalation and orientation of speech, both of which occur through the outgoing breath. It allows us to express ourselves through talking, singing, whistling, etc., to show emotions through laughter or tears, and to perform actions such as sneezing and blowing. Production of energy and power in the body are linked with Udana Vayu. It is primarily related with the regulation of respiration.

On an inner level, Udana is responsible for memory, strength, will and effort. These reflect how our energy tries to ascend in life. It governs how we express our energy in life, including our work. It governs our self-expression in word, thought and effort. Udana determines our aspiration in life. It brings our energy up in our strivings in life. It causes our minds and spirits to ascend. It gives us higher values and deeper powers of discrimination. At death, it rises up from the body and directs us towards various subtle worlds according to the power of our will and karma that move through it. When fully developed, it gives us the power to transcend the outer world, and affords various psychic powers. The practice of yoga is involved primarily with developing Udana, through which the Kundalini arises.

Secure yourself & your family against DENGUE, CHIKUNGUNYA and COVID's NEW VARIANT !!

BE RESPONSIBLE AND BUY

HEALTH INSURANCE

Call Me For More Details
Adity Rahul Dadheech
8108973815
aditydadheech@outlook.com

Ber (Ziziphus Mauritiana)

Ber is spiny shrub or small tree having dark red edible fruits. It is known as Beri , Bor , desert apple, red dates, Indian jujube and Indian plum. It is the king of arid fruits and found in arid to semi - arid areas. It belongs to Rhamnaceae family having around 40 species.The trees have round to ovel shape leaves, yellowish flowers and red round shaped fruits.

It is rich in fibre and good source of Calcium, Iron, Vitamin A , B and C. It is immunity booster. It has antioxidant and anti-cancerous properties . It lowers cholesterol level. It keeps skin healthy. It helps in relieving anxiety. It is also helpful in improving memory , digestion and anemia. Ber has blood sugar lowering properties.

Ber also holds importance in our social customs. Corresponding to Makar Sankranti in Tamilnadu. three days of the Pongal festival are celebrated called Bhogi Pongal, Surya Pongal, and Mattu Pongal. Some Tamils celebrate a fourth day of Pongal known as Kanum Pongal.

On Bhogi Pongal two significant rituals are performed. The old unwanted waste of the house are burnt in campfire (Bhogi Manta) hence removing all the dirt and unwanted things from home as well as in mind making room for new ideas or things to enter in it . It clears space in home as well. It gives warmth in the cold with message not to carry the worries and tensions in the new year .

Second ritual is Bhogi pallu or sprinkling of ber fruits with coins usually done to children below one year to ward off evil eyes. It brings the children closer to the nature and bless them with good health. It seek health from Sun. The tiny brownish balls of Ber are of the colour of Rising Sun . It may be associated with the famous Choupayi of Hanuman Chalisa - युग सहस्र योजन पर भानु लील्यो ताहि मधुर फल जानु . It seeks the strength of Hanuman and Blessings for children to grow healthy.

Ber is lord Shiva's favourite fruit and offered to him on Maha Shivratri. In Sanskrit Ber is known as Badri. Badrinath is lord of Ber tree.

In Bengal Ber is known as Kul. It is eaten after first offering to Goddess Saraswati as naivedya at the occasion of Saraswati Puja festival.

In homes Ber is consumed as fruits, it's chutney, juice, pickles, launji and as salads.

– बसन्त आसोपा
सेवानिवृत्त उपप्रबन्धक राजस्थान वित्त निगम,
साहित्यिक व सामाजिक कार्यो में रुचि

Beneficial ownership from International perspective

-CS LLB Harshita Asopa
Currently working with Chiramrit Law Chambers Jaipur Rajasthan.

Beneficial ownership is not a new-fangled concept, internationally it has gained attention due to global demand on transparency. It is prudent to identify source of funds/capital and natural persons behind the veil specifically in case of Corporate vehicles. Despite the essential and legitimate role that corporate vehicles play in the global economy, under certain circumstances, they have been misused for illicit purposes, including money laundering (ML), bribery and corruption, insider dealings, tax fraud, terrorist financing (TF), and other illegal activities. This issue of beneficial ownership is addressed by a number of international bodies and organizations, including the OECD.

With a view to better serve the global community, the OECD requested that the Financial Action Task Force ("FATF") and the Global Forum to coordinate their technical work on beneficial ownership more closely. Soon after this, Global Forum has adopted the FATF's definition of beneficial ownership and leveraged many of the same compliance procedures in both of its standards to efficiently align the definitions, which has been further encouraged by the G20.

FATF defines Beneficial owner ('BO') as the natural person(s) who ultimately owns or controls a customer and/or the natural person on whose behalf a transaction is being conducted. An important consideration to keep in mind is that determining the BO is independent of the BO's nationality. Core focus of this legal framework is to ensure that a legal vehicle identifies its BOs regardless of their nationality and place of residence. It also includes those persons who exercise ultimate effective control over a legal person or arrangement.

Unlike legal arrangements, legal persons are entities that are required to be registered in order to have legal existence, and their owners are thereby more easily identifiable include companies, bodies corporate, foundations, Anstalt, partnerships, or associations and other relevantly similar entities and legal arrangements can take the form of express trusts and similar structures, such as the fideicomiso (a trust in some civil law countries), fiducie (a French trust), true hand (a German trust), or waqf (a form of trust under Islamic law).

The FATF played important role in putting together the measures to prevent anti-money laundering and combatting the financing of terrorism (AML/CFT) in form of two recommendations addressing the transparency and beneficial ownership of legal persons (Recommendation 24) and legal arrangements (Recommendations 25).Recommendations focuses on educating countries in evaluating the risks associated with misuse of 'legal persons' and 'legal arrangements' for money laundering or finance terrorism, and to take measures to prevent their squandering. It also emphasis to ensure the availability of adequate, accurate and up-to-date information on the beneficial ownership including express trusts (the settlor, trustee and beneficiaries) through either maintaining register of beneficial ownership or an alternative mechanism for tracking ownership. Competent authorities of respective countries should not permit legal persons to issue new bearer shares or bearer share warrants, and to monitor existing bearer shares and bearer share warrants and effective measures should be made to ensure that nominee shareholders and directors are not misused for money laundering or terrorist financing. They should facilitating access to beneficial ownership information to financial institutions for Customer due diligence purpose.

Basically the main rationale of FATF is to raise awareness among countries about the abuse of legal entities and legal arrangements for criminal purposes, and then to prevent the abuse of legal entities by adopting following approach:

Assessing the risks associated with legal persons and legal arrangements

Making legal persons and legal arrangements sufficiently transparent, and

Ensuring that accurate and up-to-date basic and beneficial ownership information is available to competent authorities in a timely fashion.

While the transparency and beneficial ownership requirements of the FATF Recommendations are aimed at fighting money laundering and the financing of terrorism, they also support efforts to prevent other serious crimes such as tax crimes and corruption.

For more information about this topic.

Please connect on csharshitaasopa@gmail.com.

Sources:

The FATF Recommendation: International Standards on Combating Money Laundering and the Financing of Terrorism & Proliferation

A Beneficial Ownership Implementation Toolkit by Secretariat of the Global Forum on Transparency and Exchange of Information for Tax Purposes Inter-American Development Bank* March 2019

FATF Guidance note on Transparency and Beneficial ownership

https://www.fatf-gafi.org/en/publications/Fatfrecommendations/R24-public-consultation-oct-2022.html

वैचारिक प्रदूषण : सभी बुराइयों का मूल कारण

-UDIT CHAUBEY
SOFTWARE ENGINEER - HCLTECH

'वैचारिक प्रदूषण' दो शब्दों 'विचार' और 'प्रदूषण' के मेल से बना एक ऐसा गठबंधन है जो कि मनुष्य के विवेक को खंडित करके बना है। मनुष्य को इस धरती पर सबसे विचारवान माना जाता है।
मनुष्य ने इस बात को अपने कई कर्मों से चरितार्थ किया है। विश्व की अनेक संस्कृति और सभ्यता देने वाला वही है। मनुष्य ने अपने विवेक और बुद्धि का सही इस्तमाल करके काफी सारे कीर्तिमान रचे हैं। कोई भी अच्छा काम शुरू करने के लिए सबसे जरूरी है विचारों का शुद्ध होना,आप जो भी काम शुद्ध मन से करेंगे उसमें आपको सराहना मिलेगी।

शुद्ध का विलोम अशुद्ध होता है और यदि कोई भी वस्तु अशुद्ध हो जाती है तो वह समाज में प्रदूषण फैलाती है। प्रदूषण का मतलब है किसी कारगर वस्तु में दोष आना और फिर उसके कारण समाज में फैली हर वस्तु का दूषित हो जाना। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि आज के दौर में अति व्याप्त प्रदूषण है। परंतु इन सभी प्रदूषण की उपज का कारण क्या है ? जल दूषित कैसे हो रहा है ? वायु दूषित कैसे हो रही है ? इन प्रश्नों का सीधा जवाब हम देते हैं 'मनुष्य के कारण'। तो आखिर मनुष्य अन्य प्राकृतिक वस्तु को दूषित कैसे कर रहा है ?मनुष्य को तो हवा पानी की आवश्यकता है,तब भी वह उसे दूषित क्यों करता है? इस दुविधा का कारण है- मनुष्य के विचार प्रकृति के महत्त्व को ना समझकर उसकी प्रत्येक वस्तु का स्वार्थपूर्ण दोहन कर वातावरण में प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। लेकिन इसका कारण क्या है? क्या यह हर युग के पतन का कारण है या केवल कलयुग में व्याप्त बुराइयों का केंद्र बिंदु?

अगर पिछले युगों की बात करें तो वैचारिक प्रदूषण पुरातन समय में भी देखने को मिला। एक उदाहरण- रावण बुद्धिमान था और गुणी भी परंतु उसका अहंकार एवं अति लोभ उसकी मृत्यु का कारण बना। वहीं दूसरी और श्री राम ने अपने सद्विचारों से संपूर्ण जगत के कल्याण के लिए कार्य किया। मनुष्य के मन में कई तरह के विचार आते हैं जिनमें कई बुरे-अच्छे होते हैं,अच्छे विचारों का समूह ही मनुष्य को अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। बुरे विचार मनुष्य को गलत रास्ते पर ले जाते हैं तथा इन बुरे विचारों के समूह के कारण ही वैचारिक प्रदूषण उत्पन्न होता है। वैचारिक प्रदूषण का संक्रमण या कहें कि गलत संगति का प्रभाव निश्चित रूप से मनुष्य के अंतःकरण में पड़ता है और अनेक गंभीर बीमारियों से भी ज्यादा जानलेवा होता है। इस संक्रमण से उबरने के लिए मनुष्य को बुरे विचार जिस कारण उसके मन में उत्पन्न हो रहे हैं, उस बिंदू की तलाश कर खुद से दूर करना चाहिए। अपने मन को निर्मल एवं सुंदर विचारो से युक्त बनाकर मनुष्य सभ्यता और संस्कृति को उंचे सोपान पर पहुंच सकता है।

वैचारिक प्रदूषण को जड़ से समाप्त करने के लिए मनुष्य को योग,ध्यानऔरअच्छे कर्म निरंतर रूप से करके हमारे ऋषियों,मुनियों और गुरुओं के बताए गए मार्ग पर चलकर हम अपने विचारों को संयमित बना सकते हैं। मनुष्य मन भी एक तरह से जल के समान ही निर्मल है जो कि कहीं भी किसी भी चीज को खुद में प्रवाहित कर लेता है तथा किसी भी खाँचे में खुद को धारण कर लेता है परंतु उस जल की पवित्रता गंगा नदी के समान हो या उसी में डाले जा रहे नाले के समान अपवित्र हो, यह मनुष्य के अंतर्मन और विवेक पर निर्भर करता है।

S.GOPAAL SHARMA

+91 97866 84456
gopaal@luckshmiyarn.com

LUCKSHMI

YARN IMPEX PVT LTD

COTTON YARN FABRICS

LAXMI

YARN IMPEX

COTTON YARN FABRICS

Flat A2, SLS Luxury Apartment, 188, Sambandam Road (E),
R.S. Puram, Coimbatore - 641 002, Tamil Nadu, India
Flat A3, SLS Luxury Apartment, 188, Sambandam Road (E),
R.S. Puram, Coimbatore - 641 002, Tamil Nadu, India

T: +91 422 2544456 / 4370371 / 4358371

WELCOME. NEWYEAR

-By Sneh Prabha Sharma
Elk Grove California USA

Family Friends Take care
Elders Blessing are There
UP and downs are never for Ever
Always remember
Blessing are there
Wether You Take It
Or Throw it loose it
Old years Pass
Newyear comes with
GOOD life fast

पौधों में बुद्धि
पेड़-पौधों में बुद्धि ।
देता है सबको सिद्धि॥
ना डालो पानी ।
मुरझाये जाती डाली ॥
पौधे मानुष से कहें
ना रोक मेरी छाया ॥
मूर्च्छा करूँ तेरी काया
(Oxygen)॥

ग़र मैंने मैं पानी By
Sneh Prabha Sharma
Elk Grove California न पाया ।
पड़ेगी तने - मेरी नमाया ॥
प्रबल पौधा तुलसी ।
चढ़ती है ईश चरणों में ॥
जो देते हैं सबको सिद्धि ।
पेड़-पौधों में है बुद्धि ।।

A Leader "Pradhan Sevak" of the organization

Ramesh Dadhich, CA, CISA

DITF Well wisher ,Bahrain

An enormous humanitarian crisis has arisen as a result of the recent pandemic, with billions of people being ill and millions of lives being lost, as well as skyrocketing unemployment rates and robust economies unable to provide essential services. The conflict between Russia and Ukraine has also contributed to inflation and wreaked havoc on supply chains around the world.

CEOs have adjusted their methods of leadership to better deal with the current challenging environment. Organizations are confronting issues such as abrupt dislocation of personnel, changes in customer behavior, functioning of supply chains and eventually hurting corporate performance. A leader is the only one who can decide the leadership approach - whether the organization should stick to its tried-and-true traditional methods or explore novel approaches.

Leadership is a collection of behaviors used to help people align their collective directions, ensure that plans are carried out effectively, and revitalise an organization on a regular basis.

The traditional way of leadership was called "management" with emphasis on providing technical expertise and direction, i.e., command-and-control. These leaders focused exclusively on maximizing value to shareholders by developing plans, assigning responsibilities and controlling.

In today's evolving business environment, new and more effective leadership is emerging by focusing on needs of a broader range of stakeholders such as customers, employees, supplier, communities in addition to investors. Thus, it focuses more on building agile, digital enabled leadership which is more agile. This new approach can be termed as Servant "Sevak" leadership i.e. leader serves the people whom he leads. He focuses more regarding the well-being of the team members as a whole, and he strives to make their workday easier on all fronts (including the physical, emotional, and mental). Although not novel, this approach to leadership is garnering recognition in the current times.

Leadership is something you do not something you are. We all know that Krishna as a driver of Arjun's chariot (not as a warrior) was one of the major reasons behind the victory of the Pandavas in Mahabharata. He guided them at every step during war situation as well as in normal life.

In this new approach, leaders practice empathy, compassion, vulnabirity, gratitude, self-awareness, and self-care. One of the key traits of servant leadership is "Selflessness". With this trait, some people without any formal authority exercise leadership by their action not their words that inspire trust and energy among team members or organization. Such leaders leave the legacy weather in any business environment or political environment. Servant leaders are hard to come by – they are few and rare. However, the organizations they depart from prosper unobtrusively, even after they're gone. In a word, that's the core idea: unobtrusively. Few enjoy being left out of the adulation and acclaim.

In summary, we may choose to reflect on this quotation by Max De Pree that states "The first responsibility of a leader is to define reality. The last is to say thank you. In between, the leader is a servant."

हमारे देश की माटी

- अर्पिता दाधीच, भीलवाड़ा (राजस्थान)

हमारे देश की माटी, सुनाती आज ये गाथा।
दिया क्यों मान माता का, झुकाता विश्व क्यों माथा।

यहाँ पर शौर्य साहस की कई बलिदान गाथाएँ।
यहाँ पर पद्मिनी जैसी हुई हैं वीर माताएँ।

दरें ज्वाल जौहर की वफ़ा की आन जिंदा है।
यहाँ मेवाड़ का दुर्धर्ष गौरव गान जिंदा है।

हुई दुर्गावती जाँबाज रानी वीर सेनानी।
भयंकर ख़ौफ़ था जिसका मुग़ल भी मांगते पानी।

किरण देवी यहाँ रजपूतनी थी शेरनी शूरा।
कटारी तान अकबर पर किया अभिमान का चूरा।

यहाँ जीजा जने कोई, शिवाजी सूरमा जैसा।
करे बलिदान पन्ना माँ, न कोई कर सके वैसा।

यहाँ हाड़ी महारानी हुई जो शीश की दानी।
उतारा शीश अपना ही सजाए थाल दीवानी।

भवानी रूप में झाँसी महारानी महामाई।
जला स्वाधीनता की ज्वाल रण में वो उतर आई।

उसे तलवार के दम पर ब्रिटिश चूलें हिलानी थी।
वतन को बेड़ियों से मुक्त आजादी दिलानी थी।

दनादन काटती मस्तक लहू आँखों उतर आया।
चटायी धूल गोरों को विजय का घोष गुंजाया।

अमर विद्यावती बलिदान का इतिहास गढ़ती है।
भगतसिंह शेर बब्बर सा उसी की कोख जनती है।

कई वीरांगनाएँ हैं, जिन्होंने शत्रु संहारे।
हजारों वीर माताएँ, जिन्होंने पुत्र हैं वारे।

कहो क्या मान माँ का जो, सुतों को वार देती है।
यही है भारती माता, यही संस्कार देती है।

9867066252
mkp0496@gmail.com

Best wishes message from
below put in our all bulletin issues:

MANJU KAMAL PODDAR

AMFI CERTIFIED
MUTUAL FUND DISTRIBUTOR

504 D, SUMIT SAMARTH ARCADE,
B WING, AAREY ROAD, GOREGAON
WEST,MUMBAI – 400104.

मेरी थार यात्रा

-अंकिता कुदाल
उदयपुर

बचपन से मुझे मेरे परिवार की एक बात बहुत पसंद है कि हम सभी मिलकर हर साल कहीं ना कहीं घूमने जाते हैं खासकर हम सभी भाई बहनों को इंतजार रहता है कि हम सभी वापस कब मिलेंगे और घूमने जाएंगे । गोठ मांगलोद, बद्रीनाथ, द्वारिका, मथुरा, गोकुल, वृंदावन, आगरा, भरतपुर, अहमदाबाद, चेन्नई, मदुरै, कन्याकुमारी, रामेश्वरम, सोमनाथ, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थानों पर घूमने के बाद इस बार हमारा प्लान बना कि हम थार की यात्रा करेंगे यानी कि बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर घूमने जाएंगे। पूरे परिवार के साथ घूमने से काम के दबाव या डिप्रेशन से काफी छुटकारा मिलता है। आपकी भाई बहनों से बॉन्डिंग बढ़ती है । साथ बैठकर आपकी बचपन की यादें ताजा होती हैं। सफर में सबके साथ बैठकर अंताक्षरी खेलना, अलग-अलग गेम्स खेलना सफर को और भी अच्छा बनाता है। हम नयी चीजें सीखते हैं । साथ में घूमने से हम अपने से छोटे और बड़ों की परवाह करना सीखते हैं। आज के दौर में हम देखते हैं कि अधिकतर लोग अपने दोस्तों के साथ घूमना ज़्यादा पसंद करते है परंतु परिवार के साथ घूमने के भी अपने मायने हैं। हमें बड़ों का अनुभव मिलता है। हम छोटे भाई बहनों के साथ अपनी बचपन की यादें ताजा कर पाते हैं । हमारे बराबर के भाई बहनों के साथ मिलकर हम उनकी तकलीफों और समस्याओं को समझ सकते हैं महसूस कर सकते हैं ।

तो चलिए बात करते हैं थार घूमने से संबंधित मेरे अनुभव की _
हम सभी लोग सबसे पहले गए
चारभुजा जी मंदिर (राजसमंद) _ यह एक ऐतिहासिक एवं प्राचीन हिंदू मंदिर है जो राजस्थान के राजसमंद जिले की कुंभलगढ़ तहसील के गढ़बोर गांव में स्थित है। उदयपुर से 112 किलोमीटर और कुंभलगढ़ से 32 किलोमीटर की दूरी पर यह मेवाड़ का जाना

माना प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहां चारभुजा जी की पौराणिक एवं चमत्कारिक प्रतिमा है । इस मंदिर का निर्माण 1444 ईस्वी में राजा गंग सिंह ने करवाया था। इस मंदिर व मूर्ति की रक्षा हेतु 125 युद्ध हुए । ऐसा माना जाता है कि पांडवों ने अपनी अंतिम यात्रा हिमालय के प्रस्थान से पूर्व यहां दर्शन किए थे ।

चारभुजा जी के दर्शन के बाद हम रणकपुर जैन मंदिर पहुंचे। राजस्थान के पाली जिले में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्य स्थित रणकपुर में ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर है। चारों ओर जंगलों से घिरे इस मंदिर की भव्यता देखने लायक है ।
इतिहास _ मंदिर में शिलालेख और एक संस्कृत पाठ सोमा _ सौभाग्य काव्य के अनुसार एक आकाशीय वाहन के सपने से प्रेरित होकर धरना शाह, घनेराव के एक पोरवाल ने मेवाड़ के तत्कालीन शासक राणा कुंभा के संरक्षण में 1389 ई. में इसका निर्माण शुरू किया था, निर्माण 1458 तक जारी रहा हालांकि साइट पर आगंतुकों को प्रदान की गई ऑडियो गाइड के अनुसार निर्माण 50 वर्षों तक चला। रणकपुर शहर और मंदिर का नाम प्रांतीय शासक सम्राट राणा कुंभा के नाम पर रखा गया जिन्होंने मंदिर के निर्माण का संरक्षण किया।

उसके बाद हम गए नाकोड़ा जी गए जो कि बाड़मेर जिले में स्थित है। बाड़मेर जिसे राजस्थान का दुबई या थार नगरी भी कहा जाता है। यहां पर नाकोड़ा भैरव मंदिर, सिवाना का दुर्ग, मल्लीनाथ पशु मेला, किराडू मंदिर है । यहां का गैर नृत्य बहुत फेमस है। बाड़मेर के पचपदरा में खारे पानी की झील भी है। यहां से राजस्थान का सबसे अच्छा नमक निकलता है। इस झील के नमक में लगभग 98% सोडियम क्लोराइड होता है। यहां पर लूनी नदी बहती है जो कि कच्छ के रण में जाकर मिलती है। बाड़मेर में किराडू मंदिर भी है जिसे राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है। बाड़मेर पैट्रोलियम रिफायनरी के तौर पर भी बहुत फेमस है। मंगला फर्स्ट, ऐश्वर्या, विजया यहां की फेमस रिफाइनरी है।
तो अब हम बात करते हैं नाकोड़ा गांव की जहां हम नाकोड़ा भैरव जी के दर्शन करने गए थे। नाकोडा का मूल नाम वीरमपुर था। जिसे मेवनगर के नाम से भी जाना जाता है। यहां 23वें जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है। यहां स्थित भैरव की मूर्ति आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां नाकोड़ा भैरव जी की आराधना की जाती है। यह भी माना जाता है कि जो यहां दर्शन करता है उनकी मनोकामना जरूर पूरी होती है।
मैं आशा करती हूं कि आपको यह लेख पसंद आया होगा। मेरे सफर में जुड़े रहने के लिए और आगे की यात्रा के बारे में जानने के लिए पढे अगली बुलेटिन....

DMART
OF
ALL
FINANCIAL SERVICES
RJ CONSULTANCY SERVICES
WORK SMARTER, NOT HARDER
INCOME TAX
GST
SHAREMARKET
MUTUAL FUND
INSURANCE
LOAN
FINANCIAL ADVICE
AND MANY MORE
ALL FINANCIAL SERVICE UNDER ONE ROOF
RAHUL KAILASH SHARMA
FINANCIAL ADVISOR
RJ Consultancy Services
Shop No.08, Shubh Apt.,Subhash Nagar, Ramdev Park Road,
Miraroad East. Thane - 401 107.07.
+91 97735 84709 / 97682 23910
www.rjcs.in
rjcs_financial_Updates

हे रघुनंदन

चंद्रप्रकाश शर्मा
सेवानिवृत्त अध्यापक, भीलवाड़ा

हे रघुनंदन,हे रघुनंदन...
तुम हो प्रेम के कंद, मति मेरी अति मंद-मंद,
इसमें भरो प्रेम छंद-छंद, हे रघुनंदन, हे रघुनंदन।

निषादराज से मित्रता, शबरी पर प्रेम रहा बरसता,
हे दुष्टा के दमन कर्ता, हे दुख हरता हे सुख कर्ता,
देदो मुझको चरण वंदन, हे रघुनंदन,हे रघुनंदन।

पितृ वचन के पालक, मर्यादा के रक्षक,
साधु-संतों के हो सुरक्षक, हनुमान-मन के अधिक्षक,
मेरा मन भावों से भर दो, हे रघुनंदन,हे रघुनंदन...

Testimonials

Devesh ji Dadheech deserves compliments for his pioneering contributors in promoting Dadheech International Trade Foundation (DITF) that is engaged in furthering knowledge sharpening the skills and bringing positive attitudanal changes in Dadhich youth's incidentally these three are essential ingredients of success I feel among the activities taken up by DITF most important is scholarship to meritorious students I noticed he doing all these single handly As his mission will go a long way in all round development of Dadhich community i therefore fully support his mission by Tan Man and Dhan and urge others to join his

-Dr C L Dadhich
Former Director of Rural Economics
Reserve Bank of India

***डीआईटीएफ* अपनी स्थापना उद्देश्य में सहज ही नित नए सौपानों पर अपने गौरवमय पद चिन्ह अंकित करता बढ़ रहा है!**

प्रभुकृपा व माता दधिमथी के पावन अनुग्रह से डीआईटीएफ सुखद अनुभूतियों के अवसर सतत् प्रस्तुत कर रहा है,चिरकाल तक यह क्रम रहे,यही आशा व विश्वास है।

हार्दिक प्रसन्नता सहित-

मुरली "मधुर" दुर्ग,
चित्तौड़गढ़

छोटीबहू®
Sarees & Leggings
RETAIL OUTLET OF
Vishal PRINTS
BRANDED LEGGINGS - PANTS - PALAZZOS
femmora FFU JULIET TURNOVER LEGATO GO COLORS!
Proprietor : Santosh Motilal Sharma (Rinwa)
G-4, Regent Arcade, Ghod-Dod Road, Surat - 395 007
Mobile : 93283-38883, 99243-38883
E-mail : chhotibahu4511@gmail.com
Website : www.chhotibahu.com